

Roll No. ....

Total Pages: 03

**5173-B**  
**M.A. (FINAL) EXAMINATION, 2019**  
**SANSKRIT LITERATURE**  
**Paper – III**  
**SANKHYA AVAM YOG DARSHAN**

Time: Three Hours  
Maximum Marks: 100

**PART – A (खण्ड – अ)**

[Marks: 20]

*Answer all questions (50 words each).*

*All questions carry equal marks.*

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

**PART – B (खण्ड – ब)**

[Marks: 50]

*Answer five questions (250 words each).*

*Selecting one from each unit. All questions carry equal marks.*

प्रत्येक इकाई से एक-एक प्रश्न चुनते हुए, कुल पाँच प्रश्न कीजिए।

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

**PART – C (खण्ड – स)**

[Marks: 30]

*Answer any two questions (300 words each).*

*All questions carry equal marks.*

कोई दो प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

## खण्ड— अ

प्र.1 निम्न प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए—

- (i) त्रिविध दुःखों का सांख्यानुसार नामोल्लेख कीजिए।
- (ii) त्रिविध गुणों का नामोल्लेख कीजिए।
- (iii) प्रकृति के भेदों का नामोल्लेख कीजिए।
- (iv) पुरुष की सिद्धि के तर्क दीजिए।
- (v) सांख्य मत में तत्त्वों का नामोल्लेख कीजिए।
- (vi) सांख्य दर्शन के अनुसार अहंकार का स्वरूप लिखिए।
- (vii) “योगसूत्र” के दो भाष्यकारों या वृत्तिकारों के नाम लिखिए।
- (viii) चित्तवृत्ति का अर्थ एवं इसके प्रकार बताइये।
- (ix) योगदर्शन के अनुसार सिद्धियों की संख्या व नाम लिखिए।
- (x) योग मत में कैवल्य का अर्थ समझाइये।

## खण्ड— ब

### इकाई – I

कारिका की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

प्र.2 दृष्टवदानुश्रविकः सद्ब्रह्मविशुद्धिक्षयातिशययुक्तः।

तद्विपरीतः श्रेयान् व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्।।

प्र.3 सौम्यात्तदनुपलब्धिर्नाभावात् कार्यतस्तदुपलब्धेः।

महदादितच्चकार्यं प्रकृतिसरूपं विरूपं च।।

### इकाई – II

- प्र.4 सत्त्वं लघु प्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः ।  
गुरुवरणकमेव तमः, प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः ॥
- प्र.5 जननमरण करणानां प्रतिनियमादयुगपत्प्रवृत्तेश्च ।  
पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्य विपर्ययाच्चैव ॥

### इकाई – III

- प्र.6 पुरुषस्य दर्शनार्थं कैवल्यार्थं तथा प्रधानस्य ।  
पङ्ग्वन्धवदुभयोरपि संयोगस्तत्कृतः सर्गः ॥
- प्र.7 एते प्रदीपकल्पाः परस्परविलक्षणाः गुणविशेषाः ।  
कृत्स्नं पुरुषस्यार्थं प्रकाश्य बुद्धौ प्रयच्छन्ति ॥

### इकाई – IV

निम्न सूत्रों की भोजवृत्ति के आलोक में व्याख्या कीजिए—

- प्र.8 “योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ।”
- प्र.9 तस्यवाचकः प्रणवः ।

### इकाई – V

- प्र.10 सुखानुशयी रागः ॥
- प्र.11 तस्मिन् सति श्वास-प्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः ॥

### खण्ड— स

- प्र.12 सांख्यदर्शन के अनुसार सत्कार्यवाद का प्रतिपादन कीजिए ।
- प्र.13 पुरुष के अस्तित्व के पक्ष में तर्क दीजिए ।
- प्र.14 द्विविध समाधि का निरूपण कीजिए ।
- प्र.15 पंच क्लेशों का विवेचन कीजिए ।